इश्क़ -ए- मजाज़ी

मुन्तख़ब मज़ामीन का मजमुआ़

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

abdemustafaofficial.blogspot.com

प्यार करना और प्यार होना

प्यार करने और प्यार होने में बहुत फर्क़ है। प्यार हो जाने का मतलब ये है कि किसी पर इत्तिफाक़न नज़र पड़ गई और उस की मुहब्बत दिल में घर कर गई। इस में इन्सान का खुद पर इख्तियार नहीं होता। इसे कहते हैं प्यार हो जाना। अब एक है प्यार करना यानी पहले से ज़हन बना कर चलना कि प्यार करना है तो करना है। ये हो गया ज़बरदस्ती वाला प्यार जिस का बाज़ार दौरे हाज़िर में गर्म है।

लड़के लड़कियों के दरमियान प्यार का मुआमला कुछ ऐसा हो चुका है गोया कोई आम बात हो। जवान तो जवान अब बच्चों को भी प्यार होने लगा है। एक इन्सान की ज़िन्दगी में जिस तरह कई मक़ासिद होते हैं कि पढ़ना है, पैसे कमाने हैं, नौकरी हासिल करनी है, शोहरत हासिल करनी है..... इसी तरह ज़िन्दगी का ये भी एक मक़सद हो गया है कि प्यार करना है।

ये लड़के लड़की के दरमियान शादी से पहले वाला प्यार ही आज कल प्यार समझा जाता है। फिल्मों, ड्रामों और मखलूत तालीम वगैरा की वजह से ये दिन-ब-दिन इतना आम होता जा रहा है कि हर शख्स इसे क़ुबूल करता हुआ नज़र आ रहा है। कहने वाले ये तक कहते हैं कि प्यार करना कोई गुनाह नहीं है हालाँकि आप देखें तो इस प्यार की शुरूआत ही गुनाह से होती है। अगर कोई लड़का प्यार करने का ज़हन ले कर घर से निकलता है तो ज़ाहिर सी बात है वो किसी लड़की को तलाश करेगा जो उस के सपनों की रानी की तरह हो और जब तक वो उसे मिल ना जाये तब तक तलाश का सिलसिला जारी रहेगा और तलाश करने में ना जाने कितनी लड़कियों को उस नज़र से देखेगा जो कि सरासर नाजाइज़ है। इसी तरह लड़कियों में भी है।

प्यार हो जाना एक हादसा है जबकि प्यार करना एक मन्सूबा है। आज कल जो प्यार मन्सूबा बना कर किया जाता है वो तो है ही फालतू लेकिन जो प्यार हो जाता है वो भी फिज़ूल की चीज़ है। आज कल जो प्यार होता है इस के बारे में भी चंद बातें क़ाबिले गौर हैं।

(1) किसी लड़के को प्यार उसी लड़की से क्यों होता है जो खूबसूरत हो, जिस के हुस्न को चाँद से तशबीह दी जा सके?

(2) किसी लड़के को जल्दी किसी काली, बदसूरत, लंगड़ी या लूली लड़की से प्यार क्यों नहीं होता?

(3) किसी लड़की की किसी दाढ़ी वाले "मौलवी टाईप" शख्स से प्यार क्यों नहीं होता?

इस से साफ मालूम होता है कि जो आज कल "प्यार होता है" वो भी "प्यार करना है" और यही वजह है एक शख्स को बारह महीनों में चौबीस मरतबा प्यार होता है।

प्यार में डूबे, इश्क़ के मारे और मुहब्बत से हारे हुये नौजवानों को चाहिये कि इस फर्क़ को समझें और देखें कि उन्हें प्यार हुआ है या सब ड्रामा है।

अब्दे मुस्तफ़ा

प्यार करने वालों का निकाह

वैसे तो लड़को और लड़कियों को प्यार, मुहब्बत और इश्क़ के नाम से भी दूर रहना चाहिए लेकिन अगर कोई इस बीमारी में मुब्तला हो जाए तो इश्क़ का इज़हार करने, तोहफा देने, बातें और और मुलाकाते करने के बजाए निकाह की कोशिश करनी चाहिए।

हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ का इरशाद है :

لم یر للمتحابین مثل التزوج

दो मुहब्बत करने वालो का हमें निकाह से बेहतर कोई हल नज़र नही आता।

अब चूँकि लड़के और लड़कियों को स्कूल्स, कॉलेजेस और यूनिवर्सिटीज़ में साथ पढ़ाया जाता है तो इस बला में पड़ना लाज़मी है।

अब तो लोग इतने आगे निकल चुके है के लड़कियों को बेपर्दा पढ़ने के लिए भेजना ग़लत ही नही समझते।

लड़को को गाड़ी और स्मार्टफोन के साथ जेब खर्च दे कर माँ बाप अपने आप को अच्छा समझते है, ऐसे हालात में कभी भी आप को अपने बेटे की "गर्लफ्रेंड" और अपनी बेटी के "बॉयफ्रेंड" की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हो सकता है!

अगर कोई शरई वजह न हो तो बेहतरी इसी में है के फ़ितने को रोकने के लिए इनका निकाह कर दिया जाए, अगर किसी वजह से निकाह न हो सके तो अवलाद को भी चाहिए के जल्दबाज़ी में कोई कदम न उठाए बल्कि सब्र से काम ले।

अब्दे मुस्तफ़ा

इश्क़ से अल्लाह की पनाह

मैदान -ए- अराफात में, सैय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु के सामने एक नौजवान पेश किया गया जो इस क़द्र कमज़ोर हो चुका था कि उस की हड्डियों पर माँस भी बाकी नहीं रहा था।

आप ने पूछा : इस के साथ ऐसा क्यों हुआ?

लोगों ने कहा : इश्क़ ने इस का ये हाल कर दिया।

उस दिन से सैय्यिदुना इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हु रोज़ाना इश्क़ से अल्लाह की पनाह माँगते थे।

(انظر: الداء والدواء، فصل: ودواء هذا الداء القتال، ص497، ط دارعالم الفوائد مكة المكرمة، س1429ه)

जो खुश नसीब इश्क़ में मुब्तिला नहीं हुये, उन्हें आफियत की दुआ करनी चाहिये, क्योंकि,

बचता नहीं है कोई भी बीमार इश्क़ का
या रब! ना हो किसी को ये आज़ार इश्क़ का।

और जो मुब्तिला हो चुके हैं, उन्हें हिम्मत हारने के बजाये अपने करम वाले रब की तरफ देखना चाहिये।

उस के खज़ानों में कोई कमी नहीं, वो जो चाहे, जब चाहे, जैसे चाहे अता कर सकता है।

مَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا

"तेरे रब की अता पर कोई पाबन्दी नहीं"

उलझे हुये ज़हन को सुकूं देता है
इन्सान को सोच से फुज़ू देता है।

देखा होगा कभी बरसता बादल??
वो देने पे आ जाये तो यूँ देता है!!

अल्लामा क़ारी लुक़मान शाहिद

वेलेंटाइन डे - एक गैर इस्लामी त्यौहार

गैर इस्लामी त्यौहार और अय्याम मनाने से जब अहले इल्म और दीनदार लोग मना करते हैं तो सेक्युलर और लिबरल लोगों का एक गिरोह अखबार में लिखना और टी. वी. पर बोलना शुरु कर देता है कि फुलाँ फुलाँ दिन मनाने में क्या हर्ज है? ऐसे लोगों पर हैरत होती है कि इन्हें इस्लाम, क़ुरआन, हदीस, दीन और ईमान का कुछ पास ही नहीं कि जिन चीज़ों को खुदा वन्दे करीम और उस के रसूल ﷺ ने बहुत वाज़ेह अल्फाज़ में नाजाइज़ व हराम क़रार दिया और जिस के मुतल्लिक़ तफ़सीली अहकाम दिये हैं उन्हीं हराम कामों की वह लोग वकालत व हिमायत करते हैं जो कलिमा पढ़ते हैं और खुद को मुसलमान कहते हैं, लेकिन निहायत दीदा दिलेरी से क़ुरआन व हदीस को पसे पुश्त डाल कर खुल्लम-खुल्ला इस्लामी तालीमात का मज़ाक़ उड़ाते और दीनी अहकाम बताने वालों पर तान व तश्नीअ करते हैं। इन्हीं नाजाइज़ रुसूमात व अफ़'आल में से एक मुरव्वजा वेलेंटाइन डे का मनाना है। क़ुरआन व हदीस के मानने वालों को उन्हीं के मुक़द्दस फ़रामीन की रौशनी में कुछ सोचने की दावत दी जाती है।

ये बात तस्लीम शुदा है कि हर मुल्क या क़ौम या मुआशरे या मज़हब की कुछ पाबंदियाँ होती हैं जिन पर वो चलते हैं। मज़ाहिबे आलम का मुताला करने से ये बात वाज़ेह होती है कि हर मज़हब ने अपनी खास तहज़ीब और मुआशरती आसालीब व आदाब बयान किये हैं। हमारे दीने इस्लाम की बुनियाद अल्लाह अज़्ज़वजल्ला और उस के रसूल ﷺ की इताअत पर है और इस इताअत में ज़िन्दगी के जुमला शोबों के मुतल्लिक़ रहनुमाई है। इस्लामी मुआशरे के मुतल्लिक़ हमारे दीन की जो रहनुमाई है उस में एक बुनियादी उसूल शर्म व हया और पाक दामनी है। क़ुरआने मजीद में सूरह नूर, सूरह अहज़ाब का मुताला कर लें, आप के सामने बिल्कुल वाज़ेह हो जायेगा कि हया व पाक दामनी की इस्लाम में क्या अहमियत है और इसे किस किस अन्दाज़ में मुआशरे में नाफिज़ करने की ताकीद है। इस्लाम के मुक़ाबिले में मौजूदा मगरिबी मुआशरे की बुनियाद शर्म व

हया से दूरी और मादर पिदर आज़ादी पर है। इसीलिये मगरिबी मुआशरे में फैशन, जज़बात भड़काने वाले लिबास, बदन ना छुपाने वाले मलबूसात, लड़के लड़कियों की दोस्तियाँ, आज़ादाना मुलाक़ातें, नर्म गर्म गुफ्तगू, शहवानी अन्दाज़, तन्हाईयों में बैठना, बागों में इकट्ठे जाना, मखलूत तालीम, इकट्ठे सैर व तफरीह पर जाना और तहाइफ़ के लेन देन समेत बीसियों दीगर चीजें शामिल हैं लेकिन ये सब इस्लामी नहीं बल्कि गैर इस्लामी मुआशरे के अन्दाज़ और उस की खुसूसियात हैं।

मगरिबी या कोई भी गैर मुस्लिम मुआशरा जो भी करता है वो उन का फैल है लेकिन मै तो बेहयाई के दिन यानी वेलेंटाइन डे मनाने वाले मुसलमानों और इस की ताईद व तरगीब देने वाले मुसलमान कहलाने वाले लोगों से मुखातिब हूँ कि क्या वेलेंटाइन डे पर दिल व दिमाग में गंदे खयालात जमा कर, आँखों में आँखें डाल कर बातें करने वाले अजनबी मर्द व औरत को सूरह नूर में अल्लाह त'आला का ये फरमान नज़र नहीं आता :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ۪ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ

तर्जुमा : मुसलमान औरतों को हुक्म दो कि वो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत ना दिखायें मगर (बदन का वोह हिस्सा जो) खुद ही ज़ाहिर हो और वो अपने दुपट्टे अपने गिरेबानों पर डाल कर रखें और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर ना करें (सिवाए शौहरों और महरमों के)।

(پ18، النور: 31)

ए मुसलमान कहलाने वालों! तुम मुसलमान होकर इस दिन की ताईद करते या मनाते हो जो तुम्हारे खुदा की किताब क़ुरआन के इस फ़रमान के खिलाफ है :

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا

तर्जुमा : ए नबी! अपनी अज़वाज, अपनी बेटियों और मुसलमान औरतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हिस्सा अपने ऊपर डाले रहें ये इस से नज़दीक तर है कि इन की पहचान हो पस वो तकलीफ ना दी जायें और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है।

(پ22، الاحزاب: 59)

क्या बेहयाई का दिन मनाने वाले बेअमल और इस की तरगीब देने वाले लिबरल दिलों पर उन के खुदा के इस फ़रमान का कुछ असर नहीं हुआ कि फ़रमाया :

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

तर्जुमा : और अपने घरों में ठहरी रहो और बेपर्दा ना रहो जैसे कि अगली जाहलियत की बेपर्दगी।

(پ22، الاحزاب: 33)

आम अय्याम में और खुसूसन वेलेंटाइन डे पर अजनबी मुलाक़ात में जिस नर्म अन्दाज़ से गुफ्तगू की जाती है क्या ऐसे लोगों को खुदा का यह फ़रमान कुछ शर्म व हया दिलाता है? कि फ़रमाया :

اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۚ

अगर अल्लाह से डरते हो तो बात में ऐसी नर्मी ना करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हाँ अच्छी बात कहो।

(پ22، الاحزاب: 32)

गली मुहल्ले, या स्कूल कॉलेज या दफ्तर वगैरा में आपस में दोस्तियाँ करने वाली लड़कियाँ या औरतें क्या अल्लाह त'आला के इस फ़रमान पर अपने सर झुकायेंगी और अपने खुदा का हुक्म मानेंगी कि मोमिन औरतों के औसाफ अल्लाह अज़्ज़वजल्ला ने ये बयान फ़रमाये हैं :

مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ

तर्जुमा : मोमिन पाक दामन औरतें निकाह करने वालियाँ, ना बदकारी करने वालियाँ, ना पोशीदा दोस्ती करने वालियाँ।

(پ5، النسآء: 25)

वेलेंटाइन डे मनाने वाले तो ऊपर बयान करदा आयते क़ुरआनी को ज़रूर पढें और खुदा से डरें लेकिन इस से ज़्यादा वो सेक्युलर और लिबरल अपने गिरेबान में झाँकें कि कलिमा तो मुहम्मदे अरबी ﷺ का पढ़ते हैं लेकिन उसी प्यारे रसूल ﷺ के दीन के खिलाफ मगरिबी मुआशरे के बेहयाई के कामों की मुसलमानों में तरवीज व हिमायत में कलाम, मज़ामीन लिखते और टी. वी. चैनल्ज पर बैठ कर प्रोग्राम करते हैं और मौलवियों का नाम बोलकर हक़ीक़त में इस्लाम और उस की तालीमात का मज़ाक़ उड़ाते हैं। नबी -ए- करीम ﷺ का हतमी फ़रमान याद रखें कि शर्म व हया ईमान का एक अहम शाख है।

(مسلم، ص45، حدیث:152)

और फ़रमाया जब तुम्हारी शर्म व हया खत्म हो जाये तो जो चाहे करो (यानी बेहया इन्सान को किसी चीज़ की परवाह नहीं होती)।

(بخاری، 2/470، حدیث:3483)

क़ल्ब में सोज़ नहीं, रूह में अहसास नहीं कुछ भी पैगाम मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं
वज़अ में तुम हो नसारा, तो तमद्दुन में हिनूद
ये मुसलमान हैं जिन्हें देख के शरमायें यहूद।

दानिश शहान क़ादरी अत्तारी

इस्लाम में इश्क़े मजाज़ी का तसव्वुर

इस्लाम एक मुकम्मल ज़ब्ता -ए- हयात है और दीने फितरत है।

इश्क़ व मुहब्बत की बात करें तो दो तरह के लोग क़सरत से पाये जाते हैं, पहला तबक़ा बिल्कुल दीनी होने की वजह से ये कहते और मानते नज़र आता है कि इस्लाम में ना-

महरम से मुहब्बत व इश्क़ हराम है और इस्लाम सख्ती से मना फरमाता है, इस इश्क़ व मुहब्बत से और इस्लाम के नज़दीक़ इस की कोई हक़ीक़त नहीं, दूसरा तबक़ा बिल्कुल इस्लाम से दूर तबक़ा वो कहता है कि नहीं मुहब्बत व इश्क़ के बग़ैर दुनिया में रखा ही क्या है और वो उस इश्क़ व मुहब्बत में मुब्तिला हो कर ज़िना तक पहुँच जाता है।

अब आइये देखते हैं कि इस्लाम इस इश्क़ व मुहब्बत के बारे में क्या कहता है और आया इस गैर महरम से इश्क़ की कोई हैसियत भी है इस्लाम में या नहीं, तो कुछ अहादीस पेश है इस बारे में :

इश्क़ सख्त तरीन आज़माईश है :

عن ابن عباس قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: خيار أمتي الذين يعفون إذا أتاهم الله من البلاء شيئا، قالوا: يا رسول الله وأي بلاء هو؟ قال: العشق. الديلمي

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है फरमाते हैं : रसूलुल्ल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वो हैं जब उन ओआर आजमाईश आती है तो वो पाकदामनी इख्तियार करते हैं, लोगों ने अर्ज़ किया : कौन सी आजमाईश? आप ﷺ ने फ़रमाया : इश्क़।

(كنز العمال، جلد دوم، حديث3626)

तो मालूम पड़ा इस हदीस से कि ना-महरम का इश्क़ गुनाह नहीं बल्कि गुनाह ये है कि बन्दा ना-महरम से इश्क़ के बाद इस्लामी हुदूद व क़ुयूद को तोड़ता है और गुनाह होता है लेकिन अगर आशिक़ अपने इश्क़ को दिल में रखे और निकाह की कोशिश करे और उस इश्क़ में खुद को पाक दामन रखे तो मेरे रसूले पाक ﷺ ने ऐसे आशिक़ को बेहतरीन कहा है।

पाक दामन आशिक़ शहीद है :

"من عشق فكتم، وعف فمات فهو شهيد" خط عن ابن عباس

जिस ने इश्क़ किया और उसे पौशीदा रखा और पाकदामन रहा उसी हालत में मर गया तो वो शहीद की मौत मरा।

(کنز العمال، جلد دوم، حدیث 1873)

इस हदीस से मालूम पड़ा कि आशिक़ अगर अपने इश्क़ को छुपाये मतलब उस लड़की को ना पता चले कि वो उस से इश्क़ करता है बल्कि सीधे निकाह की कोशिश करे और अगर निकाह मुम्किन ना हो तो उस इश्क़ को दिल में दबा दे और किसी से ज़िक्र ना करे तो अल्लाह पाक उस को शहादत का रुतबा नसीब फ़रमाता है। माशा अल्लाह।

इश्क़ का वाहिद हल निकाह है :

इस्लाम इश्क़ में फौरन निकाह का क़ाइल है, बगैर माशुक को उस के इश्क़ का पता चलने के, अगर आशिक़ माशूक़ से इश्क़ का इज़हार कर दे तो मुम्किन ही नहीं कि वो गुनाह से बच सके। आइये इस पर हदीस मुबारक देखते हैं :

حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ رَاشِدٍ عَنْ مَكْحُولٍ عَنْ رَجُلٍ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ دَخَلَ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلٌ يُقَالُ لَهُ عَكَّافُ بْنُ بِشْرٍ التَّمِيمِيُّ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَا عَكَّافُ هَلْ لَكَ مِنْ زَوْجَةٍ قَالَ لَا قَالَ وَلَا جَارِيَةٍ قَالَ وَلَا جَارِيَةَ قَالَ وَأَنْتَ مُوسِرٌ بِخَيْرٍ قَالَ وَأَنَا مُوسِرٌ بِخَيْرٍ قَالَ أَنْتَ إِذًا مِنْ إِخْوَانِ الشَّيَاطِينِ وَلَوْ كُنْتَ فِي النَّصَارَى كُنْتَ مِنْ رُهْبَانِهِمْ إِنَّ سُنَّتَنَا النِّكَاحُ شِرَارُكُمْ عُزَّابُكُمْ وَأَرَاذِلُ مَوْتَاكُمْ عُزَّابُكُمْ أَبِالشَّيْطَانِ تَمَرَّسُونَ مَا لِلشَّيْطَانِ مِنْ سِلَاحٍ أَبْلَغُ فِي الصَّالِحِينَ مِنْ النِّسَاءِ إِلَّا الْمُتَزَوِّجُونَ أُولَئِكَ الْمُطَهَّرُونَ الْمُبَرَّءُونَ مِنْ الْخَنَا وَيْحَكَ يَا عَكَّافُ إِنَّهُنَّ صَوَاحِبُ أَيُّوبَ وَدَاوُدَ وَيُوسُفَ وَكُرْسُفَ فَقَالَ لَهُ بِشْرُ بْنُ عَطِيَّةَ وَمَنْ كُرْسُفُ يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ رَجُلٌ كَانَ يَعْبُدُ اللَّهَ بِسَاحِلٍ مِنْ سَوَاحِلِ الْبَحْرِ ثَلَاثَ مِائَةِ عَامٍ يَصُومُ النَّهَارَ وَيَقُومُ اللَّيْلَ ثُمَّ إِنَّهُ كَفَرَ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ فِي سَبَبِ امْرَأَةٍ عَشِقَهَا وَتَرَكَ مَا كَانَ عَلَيْهِ مِنْ عِبَادَةِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ ثُمَّ اسْتَدْرَكَهُ اللَّهُ بِبَعْضِ مَا كَانَ مِنْهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَيْحَكَ يَا عَكَّافُ تَزَوَّجْ وَإِلَّا فَأَنْتَ مِنْ الْمُذَبْذَبِينَ قَالَ زَوِّجْنِي يَا رَسُولَ اللَّهِ قَالَ قَدْ زَوَّجْتُكَ كَرِيمَةَ بِنْتَ كُلْثُومٍ الْحِمْيَرِيِّ

हज़रते अबू ज़र से मरवी है कि नबी -ए- करीम ﷺ की खिदमत में एक मरतबा अक्काफ़ बिन बशीर तमीमी नाम का एक आदमी आया, नबी -ए- करीम ﷺ ने उस से पूछा : "अक्काफ़! तुम्हारी कोई बीवी है?"

अक्काफ़ ने कहा : "नहीं"

नबी -ए- करीम ﷺ ने पूछा "कोई बांदी?"

उस ने कहा : "नहीं"

नबी -ए- करीम ﷺ ने पूछा : "तुम मालदार भी हो?"

अर्ज़ किया : "जी अलहम्दु लिल्लाह"

नबी -ए- करीम ﷺ ने फ़रमाया : "फिर तो तुम शैतान के भाई हो अगर तुम इसाईयों में होते तो उन के राहिबों में शुमार होते लेकिन हमारी सुन्नत तो निकाह है, तुम में से बदतरीन लोग कुँवारे है और घटिया तरीन मौत मरने वाके कुँवारे हैं। क्या तुम शैतान से लड़ते हो? शैतान के पास नेक आदमियों के लिये औरतों से ज़्यादा कारगर हथियार कोई नहीं सिवाये इस के कि वो शादी शुदा हो। यही लोग पाकीज़ा और गन्दगी से मुबर्रह होते हैं। अक्काफ़ ये औरतें तो हज़रते अय्यूब, दाऊद, यूसुफ और क़रसफ की साथी रही हैं।

बसीर बिन अतिय ने पूछा : "या रसूलल्लाह ﷺ क़रसफ कौन था?

नबी -ए- करीम ﷺ ने फ़रमाया : " ये एक आदमी था जो किसी साहिल पर तीन सौ साल तक अल्लाह की इबादत में मसरुफ रहा। दिन को रोज़े रखता था और रात को क़ियाम करता था लेकिन फिर एक औरत के इश्क़ के चक्कर में फँस कर अल्लाह त'आला के साथ कुफ्र कर बैठा और अल्लाह की इबादत भी छोड़ दी बाद में अल्लाह ने उस की दस्तगीरी फरमाई और तौबा क़ुबूल फरमा ली, अरे अक्काफ़! निकाह कर लो वरना तुम तज़ब्जुब का शिकार रहोगे।"

उन्होने अर्ज़ किया :"या रसूलल्लाह ﷺ आप खुद ही मेरा निकाह कर दीजिये।

नबी ए करीम ﷺ ने फ़रमाया : "मैने करीमा बिन्ते कुलसुम हमीरी से तुम्हारा निकाह कर दिया।

(مسند احمد، جلد نہم، حدیث1551)

इस हदीसे से मालूम हूआ :

(1) निकाह की क़ुदरत रखने के बावजूद जो निकाह ना कर वो शैतान के रास्ते पर है।

(2) नेक शख्स अगर कुँवारा है तो उस की नेकी को औरत का इश्क़ कभी भी गुनाह और कुफ्र तक ले जा सकता है चाहे वो तीन सौ साल का शब बेदार आबिद और तीन सौ साल का रोज़ेदार ही क्यों ना हो।

(3) औरत का इश्क़ कुंवारों के लिये फितना हैं

(4) औरत के इश्क़ के इस फ़ितने से बचने का वाहिद हल निकाह है।

खुलासा :

तो ये है इस्लाम का इश्क़े मजाज़ी के मुतल्लिक़ तसव्वुर कि जहाँ पाकदामन आशिक़ को शहादत का रुतबा मिलता है वहीं अगर आशिक़ इस इश्क़ का इज़हार मासूक़ से कर दे तो ये इश्क़ गुनाह व कुफ्र तक ले जाता है। दुआ है कि अल्लाह पाक सब को अव्वल तो इश्क़ से बचाये लेकिन अगर कोई इश्क़ कर बैठे तो उसे छुपाने और पाकदामन रहने की तौफीक़ अता फरमाये ताकि क़ियामत में शहादत का रुतबा नसीब हो।

मुहम्मद सिराज़ क़ादरी (पाकिस्तान)

वेलन्टाइन डे या गुनाह डे?

आज आवाम में जिस तरह से वेलन्टाइन डे मनाया जाता है उस से आप सब ज़रूर वाक़िफ़ होंगे, गैर तो गैर हमारे मुसलमान मर्द व औरत भी इस बुरी बला के शिकार नज़र आ रहे हैं। हम सबसे पहले इस दिन की ईजाद को बयान करते हैं ताकि मुसलमानों पर वाज़ेह हो कि इस गुनाहों से भरपूर दिन की हकीकत क्या है चुनाँन्चे कहा जाता है कि

एक पादरी जिस का नाम वेलन्टाइन था तीसरी सदी ई-सवी में रूमी बादशह क्लाडेस सानी के जेरे हुकूमत रहता था।

किसी ना फरमानी की बिना पर बादशाह ने पादरी को जेल में डाल दिया, पादरी और जेलर की लड़की के माबैन इश्क़ हो गया हत्ता कि लड़की ने इस इश्क़ में अपना मज़हब छोड़ कर पादरी का मज़हब नसरानिय्यत क़ुबूल कर लिया, अब लड़की रोज़ाना एक सुर्ख गुलाब ले कर पादरी से मिलने आती थी, बादशाह को जब इन बातों का इल्म हुवा तो उस ने पादरी को फांसी देने का हुक्म सादिर कर दिया, जब पादरी को इस बात का इल्म हुवा कि बादशाह ने इस की फांसी का हुक्म दे दिया है तो उस ने अपने आखिरी लम्हात अपनी मा'शूक़ा के साथ गुजारने का इरादा किया और इस के लिये एक कार्ड उस ने अपनी माशूक़ा के नाम भेजा जिस पर येह तहरीर था "मुख्लिस वेलन्टाइन की तरफ़ से" बिल आखिर 14 फरवरी को उस पादरी को फांसी दे दी गई इस के बाद से हर 14 फरवरी को यह मुहब्बत का दिन उस पादरी के नाम वेलन्टाइन डे के तौर पर मनाया जाता है।

इन्तिहाई दुख और अफसोस की बात यह है कि इस दिन को काफिरों की तरह बे हयाई के साथ मनाने वाले बहुत से मुसलमान भी अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के अता किये हुये पाकीज़ा अहकामात को पीठ पीछे डालते हुये खुल्लम खुल्ला गुनाहों का इरतिकाब कर के ना सिर्फ यह है कि अपने नामए आमाल की सियाही में इज़ाफा करते हैं बल्कि मुस्लिम मुआशरे की पाकीज़गी को भी इन बेहूदगियों से नापाक व आलूदा करते हैं।

इस दिन को मनाने का अन्दाज़ यह होता है कि बद निगाही, बे पर्दगी, फ़ह्हाशी, उर्यानी, अजनबी लड़के लड़कियों का मेल मिलाप, हंसी मज़ाक़, इस ना जाइज़ तअल्लुक को मज़बूत रखने के लिये तहाइफ़ का तबा-दला और आगे ज़िना रोज़े इस्यां ज़ोरो शोर से जारी रहती हैं और इन सब शैतानी कामों के नाजाइज़ व हराम होने में किसी मुसल्मान को ज़र्रा भर भी शुबा नहीं हो सकता।

क़ुरआने करीम की आयाते बय्यिनात और नबी -ए- करीम ﷺ के वाज़ेह इर्शादात से इन उमूर की हुरमत व मज़म्मत साबित है।

अल्लाह त'आला फ़रमाता है : मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें यह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक़ अल्लाह को उन के कामों की खबर है और मुसलमान औरतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफाज़त करें।

(النور: 30,31)

मिश्कातुल मसाबीह में है :

وعن الحسن مرسلا قال: بلغنی أنّ رسول صلی اللہ علیہ و سلم قال: لعن اللہ الناظر و المنظور الیہ

رواہ البیهقي في شعب الایمان

हसन बसरी रहीमहुल्लाह से मुरसलन मरवी है, कहते हैं : मुझे यह खबर पहुंची है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि देखने वाले पर और उस पर जिस की तरफ़ नज़र की गई अल्लाह ला'नत फ़रमाता है (या'नी देखने वाला जब बिला उज़्र क़स्दन देखे और दूसरा अपने को बिला उज़्र क़स्दन दिखाए)।

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب النکاح، ج1، ص576، الحدیث3125)

सुनने अबू दाऊद में है :

और हाथ ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (हराम को) पकड़ना है और पाऊँ ज़िना करते हैं और इन का ज़िना (हराम की तरफ़) चलना है और मुंह (भी) ज़िना करता है और इस का ज़िना बोसा देना है ।

(ابوداؤد، کتاب النکاح، ج2، ص309، الحدیث2103)

सहीह मुस्लिम में है :

عن أبي هريرة قال قال رسول الله صلى لاالله عليه و سلم صنفان من أهل النار لم أرهما. قوم معهم سياط كأذناب البقر يضربون بها الناس ونساء كاسيات عاريات مميلات مائلات رءوسه كأسنمة البخت المائلة لا يدخلن الجنة ولا يجدن ريحها وإن ريحها اليوجد من مسيرة كذا وكذا."

हज़रते अबू हुरैरा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है, फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया : दोज़खियों की दो जमाअतें ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अहदे मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयिन्दा पैदा होने वाली हैं, उन में) एक वोह क़ौम जिन के साथ गाय की दुम की तरह कोड़े होंगे जिन से लोगों को मारेंगे और (दूसरी क़िस्म) उन औरतों की है जो पहन कर नंगी होंगी दूसरों को (अपनी तरफ़) माइल करने वाली और माइल होने वाली होंगी, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की एक तरफ़ झुकी हुई कोहानों की तरह होंगे वोह जन्नत में दाखिल न होंगी और न उस की खुशबू पाएंगी हालाँकि उस की खुशबू इतनी इतनी दूर से पाई जाएगी।

(مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، ص1177، الحدیث125)

नबी -ए- करीम ﷺ ने इर्शाद फरमाया :

"لان يعطن في رأس احدكم بمخيط من حديد خير له من أن يمس امرأة لا تحل له"

तुम में से किसी के सर में लोहे की सूई घोंप दी जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि वोह ऐसी औरत को छूए जो उस के लिये हलाल नहीं।

(معجم کبیر، ج20، ص211، الحدیث486)

नबिय्ये करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया :

ايا كم والخلوة بالنساء والذي نفسي بيده ما خلا رجل بامرأة الا دخل الشيطان بينهما ولان يرحم رجلا خنزير متلطخ بطين اوحماة اى طين اسود منتن. خير له من أن يزحم منكبه امرأة لا تحل له

औरतों के साथ तन्हाई इख्तियार करने से बचो! उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्जए क़ुदरत में मेरी जान है! कोई शख्स किसी औरत के साथ तन्हाई इख़्तियार नहीं करता मगर उन के दरमियान शैतान दाखिल हो जाता है और मिट्टी या सियाह बदबूदार कीचड़ में लिथड़ा हुआ खिन्जीर किसी शख्स से टकरा जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि उस के कन्धे ऐसी औरत से टकराएं जो उस के लिये हलाल नहीं।

शैखुल इस्लाम शिहाबुद्दीन इमाम अहमद बिन हजर मक्की शाफेई अलैहिर्रहमा अपनी किताब “अज़्ज़वाजिर अनिक्तिराफ़िल कबाइर" में इर्शाद फ़रमाते हैं : "बा'ज़ों ने अपने हाथ को किसी औरत के हाथ पर रखा तो उन दोनों के हाथ चिमट गए और लोग उन्हें जुदा करने में नाकाम हो गए यहां तक कि उलमा ए किराम ने उन की रहनुमाई फ़रमाई कि वोह अहद करें कि ऐसी ना फ़रमानी का इरतिकाब कभी नहीं करेंगे और अल्लाह की बारगाह में गिड़गिड़ा कर सिदक़े दिल से तौबा करें पस उन्होंने ऐसा किया तो अल्लाह ने उन्हें छुटकारा अता फ़रमाया। और असाफ़ और नाइला का क़िस्सा मशहूर है कि उन्होंने ज़िना किया तो अल्लाह ने उन दोनों का चेहरा मस्ख कर के पथ्थर बना दिया।"

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الثاني في الكبائر الظاهرة، كتاب النكاح، 2/6)

वेलन्टाइन वाले दिन अजनबी मर्द व औरत के माबैन जो ना जाइज़ मुहब्बत का तअल्लुक़ क़ाइम होता है और जो आपस में तोहफे दिये और लिये जाते हैं इसके बारे में फुक़हाए किराम फरमाते हैं कि ये रिश्वत के हुक्म में दाखिल है इसलिये ना जाइज़ व हराम है अगर किसी ने यह तहाइफ़ लिये हैं तो उस पर तौबा के साथ साथ यह तहाइफ़ वापस करना भी लाज़िम है।

चुनाँचे बहरुराइक़ में हैं :

"ما يدفعه المتعاشقان رشوة يجب ردّها ولا تملك"

यानी आशिक़ व माशूक़ (ना जाइज़ मुहब्बत में गिरिफ्तार) आपस में एक दूसे को जो (तहाइफ़) देते हैं वोह रिश्वत है उन का वापस करना वाजिब है और वोह मिल्कियत में दाखिल नहीं होते।

(بحر الرائق، كتاب القضاء، ج6، 661)

मुसलमानो को चाहिए कि कुल्ली तौर पर इस दिन का बॉयकॉट करें। इस दिन को अपने लिए गुनाह डे ना बनायें। खुद भी बचें और दूसरों को भी बचाने की कोशिश करें।

मुहम्मद रियाज़ क़ादरी

क्या प्यार करना गुनाह है?

कई लड़के और लड़कियों के ज़हन में ये सवाल आता होगा कि क्या प्यार करना गुनाह है? इस का जवाब यही है कि जो प्यार का तरीक़ा इस ज़माने में राईज है वो गुनाह नहीं बल्कि कई गुनाहों का मजमूआ है।

अभी जिस प्यार का बाज़ार गर्म है उस की शुरूआत ही गलत तरीक़े से होती है। एक लड़का, जिस ने पहले से सोच रखा होता है कि मुझे अपने "सपनों की रानी" तलाश करनी है और एक लड़की जिसे अपने "सपनों के राजकुमार" की तलाश होती है।
अब ज़ाहिर सी बात है कि उसे ढूँढने के लिये निगाहें दौड़ानी होगी और जब तक वो नज़र आयेगी या आयेगा तब तक हम गुनाहों की दहलीज़ पर क़दम रख चुके होंगे।

जिस से निकाह करना हराम नहीं है, उसे देखना जाइज़ नहीं है लिहाज़ा मालूम हुआ कि प्यार की गाड़ी शुरू होने से पहले ही गुनाहों का सिलसिला शुरू हो गया।

ये तो शुरूआत थी, फिर आगे आगे देखिये होता है क्या.........,

फिर दिल की बात बताई जाती है यानी प्रपोज किया जाता है, उस से भी पहले बातें की जाती हैं और ऐसे काम किये जाते हैं जिस से सामने वाला/वाली खुश (इम्प्रेस) हो जाये, ये सब गुनाह नहीं तो और क्या है?

हाँ अगर किसी को ऐसा प्यार हुआ कि अचानक किसी पर नज़र पड़ गयी और अपना दिल खो बैठा तो अब उसे चाहिये कि निकाह की कोशिश करे और कामयाबी ना मिले तो सब्र करे।

गुनाहों भरे मराहिल (स्टेप्स) यानी प्रपोज करना, तोहफे देना, इम्प्रेस करने के लिये शोब्दे (कर्तब) दिखाना वगैरा के बजाये अल्लाह त'आला से खैर तलब करने और जाइज़ तरीक़े से प्यार को पाने की कोशिश करे।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पसली और मुहब्बत

अल्लामा अब्दुल वह्हाब शारानी (मुतवफ्फ़ा 973 हिजरी) लिखते हैं कि अगर कोई ये कहे कि हज़रते हव्वा को हज़रते आदम अलैहिस्सलाम की पसली से ही क्यों पैदा किया गया तो इसका जवाब ये है कि इसमें ये हिकमत है कि (पसली में झुकाव है और) इस झुकाव की वजह से औरत को अपने शौहर और अपनी औलाद की तरफ मैलान रहे।

मर्द का बीवी की तरफ माइल होना हक़ीक़त में अपने उपर ही माइल होना है क्योंकि ये उस का जुज़ (हिस्सा) है जबकि औरत का शौहर की तरफ मैलान इसलिये है कि पसली से पैदा की गयी और पसली में झुकाव और मैलान है।

शैख (मुहियुद्दीन इब्ने अरबी) ने फरमाया कि अल्लाह त'आला ने उस जगह को जिससे आदम से हव्वा निकली, शहवत के साथ मामूर फरमाया ताकि वुजूद में खला (खाली जगह) बाक़ी ना रहे पस जब ख्वाहिश से ढांपी गयी तो इसने उसकी तरफ मैलान किया और ये अपनी तरफ ही माईल होना है क्योंकि वो आप का जुज़ और हव्वा आपकी तरफ माईल हुई क्योंकि ये इनका वतन है जिससे वो पैदा हुई।

अगर कोई कहे कि जब तो हव्वा की (आदम) से मुहब्बत वतन की मुहब्बत है जबकि आदम की मुहब्बत अपनी ज़ात की मुहब्बत है तो जवाब ये है कि हाँ ये इसी तरह है। इसीलिये मर्द की औरत से मुहब्बत ज़ाहिर है कि ये इसका ऐन है, रही औरत तो उसे क़ुव्वत दी गयी है जिसे हया से ताबीर किया जाता है पस उस पर उसकी क़ुव्वत -ए-इख्फा की वजह से मर्द की मुहब्बत ज़ाहिर नहीं होती क्योंकि वतन उससे इस तरह मुत्तहिद नहीं जिस तरह उससे आदम का इत्तिहाद है।

(الیواقیت والجواھر فی بیان عقائد الاکابر، مترجم، ص270)

मज़्कूरा इक़्तिबास से ये बातें ज़ाहिर हुई :

(1) मर्द का औरत की तरफ माईल होना हक़ीक़त में अपनी तरफ ही माइल होना है क्योंकि वो इसका जुज़ है।

(2) औरत का भी मर्द की तरफ मैलान है लेकिन चूंकि ये मर्द की तरह उसका जुज़ की मानिन्द मुत्तहिद नहीं बल्कि वतन से मुहब्बत है इसीलिये औरत की मुहब्बत ज़ाहिर नहीं और इसकी एक वजह हया भी है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

आलिम और इश्क़

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि बगदाद का एक बहुत बड़ा आलिम अपने तलबा के साथ हज के सफर पर रवाना हुआ। दौराने सफर पानी ना मिलने की वजह से सब निढाल हो कर एक गिरजा घर के साये में आराम करने लगे। तलबा साये तले सो गये लेकिन उस्ताद साहब पानी की तलाश में निकल पड़े।

पानी की तलाश में घूम रहे थे कि एक ईसाई लड़की पर नज़र पड़ी जो चमकते हुये सूरज की तरह खूब सूरत थी। अब पानी को भूल कर उस्ताद साहब उसी की फिक्र में लग गये फिर उस लड़की के घर पहुँच कर उस के बाप से बात की तो उस ने कहा कि अगर तुम हमारा दीन क़ुबूल कर लो तो ही कुछ हो सकता है।

उस्ताद साहब ने नसरानियत को क़ुबूल कर लिया, इधर तलबा अभी सो रहे थे।

फिर जब शादी के लिये महर की बात आई तो लड़की ने कहा कि तुम इन खिंज़ीरों को एक साल तक चराओ तो यही मेरा महर होगा।

उस्ताद साहब ने कहा कि ठीक है लेकिन मेरी एक शर्त है कि एक साल तक तुम अपना चेहरा मुझ से नहीं छुपाओगी।

लड़की बोली कि मंज़ूर है। उस्ताद साहब ने खुतबा देने वाला असा उठाया और खिंज़ीरों को चराने निकल पड़े।

जब तलबा जागे तो ये सब जानने के बाद नीन्द के साथ उन के होश भी उड़ गये। फिर वोह उस्ताद साहब से मिलने गये तो देखा कि वोह खिंज़ीरों को इधर उधर जाने से रोक रहे हैं। तलबा ने उस्ताद साहब को क़ुरआन पाक, इस्लाम और नबी करीम ﷺ के फज़ाइल

याद दिलाये तो उस ने कहा कि मुझ से दूर हो जाओ, मै ये सब तुम से ज़्यादा जानता हूँ। आखिर कार तलबा मायूस हो कर सफरे हज पर रवाना हो गये।

हज अदा करने के बाद वापसी पर जब उसी मक़ाम पर पहुँचे तो फिर उस्ताद साहब की हालत देखने गये कि शायद तौबा कर ली हो लेकिन उसे उसी हालत में पाया। तलबा ने नसीहत की लेकिन कोई फाइदा नहीं हुआ। एक बार फिर वोह हसरत ज़दा दिल लिये वापस हो लिये।

जब तलबा थोड़ी दूर निकल गये तो उन्होंने देखा कि पीछे कोई शख्स चीख चीख कर उन्हें रोक रहा है।

जब वो क़रीब आया तो मालूम हुआ कि वो कोई और नहीं बल्कि उस्ताद साहब थे। उस्ताद साहब ने कहा कि मै गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई मअबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं, ये आज़माइश थी जिससे मै निकल गया।

एक दिन तलबा उस्ताद साहब के घर पर थे कि एक औरत ने दरवाज़े पर दस्तक दी। पूछा गया तो कहने लगी कि मुझे शैख से मिलना है, शैख से कहो कि फुलाँ राहिब की बेटी इस्लाम क़ुबूल करने आई है। फिर वोह अन्दर दाखिल हुई और बोली :

ए मेरे सरदार! आप के हाथ पर मुसलमान होने आई हूँ। जब आप चले गये तो मैने एक ख्वाब देखा जिस में हज़रते अली बिन अबी तालिब रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की ज़ियारत हुई। उन्होने फ़रमाया कि दीने मुहम्मदी के अलावा कोई दीन सच्चा नहीं फिर फ़रमाया कि अल्लाह त'आला ने तेरे ज़रिये एक बन्दे को आज़माया है चुनाँचे अब मै आप के पास आ गयी हूँ।

इस्लाम क़ुबूल करने के बाद शैख ने उन से निकाह कर लिया।

(انظر: بحر الدموع اردو، ص128، ملخصًا)

इस वाक़िये में कई अस्बाक़ हैं लेकिन एक बड़ा सबक़ ये है कि जब किसी को किसी से इश्क़ हो जाये तो उसे पाने के लिये हद से आगे ना बढ़े। अगर हद के अंदर रह कर हासिल ना कर पाये तो फिर सब्र करे और अपने रब से बेहतरी की उम्मीद रखे।

बेशक अल्लाह त'आला के लिये ये नामुमकिन नहीं कि किसी के दिल को फेर दे। अगर आप अपनी चाहत में मुख्लिस हैं तो अल्लाह के फज़्ल से कोई ना कोई रास्ता ज़रूर दिखाई देगा।

अब्दे मुस्तफ़ा

औलाद के जज़्बात

मैने एक आदमी को देखा जो अपनी बेटी को सिर्फ इस लिये ज़दो कोब कर रहा था कि उस ने ये क्यों कहा :

"अब्बू जी, मेरा फुलाँ जगह निकाह कर दो।"

मुझे बहुत तरस आया, मैने उसे कहा : मेरे भाई! इसे बिल्कुल ना मारो, जब बेटा बेटी बोल कर कह दें तो उन का निकाह कर देना चाहिये।

वैसे आपके लिये बहुत ज़रूरी है कि बेटी का निकाह करने से पहले उस की राय लें। अगर उसका दिल किसी और तरफ माइल हो तो उस का लिहाज़ करें, ताकि बाद में फितना पैदा ना हो।

इश्क़ बहुत बड़ी बीमारी है, इस से बड़ी बीमारी क्या हो सकती है!!

(ملخصاً: المبسوط للسرخسی، کتاب النکاح، ج4، ص192، 193، داراحیاءالتراث العربی بیروت)

बाज़ बच्चे जब जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखते हैं तो उन में इश्क़ो मुहब्बत वाली हिस्स बेदार हो जाती है। ये एक फितरती ज़ौक़ है, जिस के साथ मुक़ाबला नहीं किया जा सकता, हाँ वालिदैन का ये फ़र्ज़ ज़रूर है कि इस का दुरुस्त रास्ता मुतअय्यन करें।

मशहूर सूफी और वलीयुल्लाह, हज़रते यहया बिन माज़ राज़ी रहीमहुल्लाह से किसी ने कहा :

आप का बेटा फुलानी औरत पर आशिक़ हो गया है।

आप ने फरमाया : सारी तारीफ उस अल्लाह के लिये जिस ने मेरे बेटे को इंसानों वाली तबियत अता फरमायी।

(انظر: الداء والدواء، ص508، ط دارعالم الفوائد مكة المكرمة، س1429ھ)

एक अरबी शायर कहता है :

اذا انت لم تعشق ولم تدر ما الهوى

فقم واعتلف تبنا فانت حمار

जब तुम किसी पर आशिक़ नहीं हुये तो तुम ने मुहब्बत को समझा ही नहीं, इस लिये उठ कर घास चरो, तुम गधे हो (और मुहब्बत भरे जज़बात को समझना इंसानों का काम है, गधे का नही।)

इस सिलसिले में कुछ गुज़ारिशात हैं :

(1) शुरू से ही अपने बच्चों की निगरानी करें और उन्हें गैर महरम औरतों/मर्दों में घुलने मिलने से बाज़ रखें।

(2) उन्हें रसूल -ए- पाक ﷺ की मुहब्बत सिखायें ताकि वो इश्क़े रसूल में परवान चढ़े, और यादे हुज़ूर में ही आँसू बहायें।

(3) अगर आप शुरु से बच्चों की निगाहदश्त (देख भाल) नहीं कर सके और वो इश्क़िया मामलात में मुब्तिला हो गये हैं तो फितरत के खिलाफ जंग ना करें, बल्कि उन के निकाह का बन्दोबस्त करें।

(4) आप का बेटा/बेटी जिस जगह निकाह के लिये ज़िद्द करे, अगर वो लोग आप की समझ से बाहर हैं तो बच्चों को प्यार और दलील से समझायें, अगर उन के मामलात हद्द से बढ़े ना हुये तो मान जायेंगे लेकिन अगर मामलात हद्द से तजावुज़ कर गये हुये तो आप मान जाइयेगा।

(5) जिस तरह आप बचपन में अपने बच्चों की हर खुशी का लिहाज़ रखते आये हैं, इसी तरह निकाह के मामले में भी रखें।

बहुत दफा ऐसा हुआ होगा की आप के बेटे/बेटी ने आप के खिलाफे मिजाज़ काम किया होगा, लेकिन आप उन की खुशी के लिये खामोश रह गये, और उन्हें दुआएं दे कर अपना दिल साफ कर लिया।

इसी तरह निकाह के मामले में भी उन की पसंद का लिहाज़ करें, और उन्हें दुआ-ए- खैर से नवाज़ कर चुप हो जायें, अल्लाह पाक बेहतर करेगा।

अल्लामा क़ारी लुक़मान शाहिद साहिब

औरत की मुहब्बत

मेरे पास एक अफसुर्दा (उदास) शख्स तावीज़ात के लिये आया और कहने लगा कि मैने पसंद की शादी की थी, लेकिन मेरी अहलिया ने ज़बरदस्ती तलाक़ ले ली हालांकि उसने हमेशा साथ निभाने का पक्का वादा किया था और क़समें भी खायी थी.......,

अब मै उसके बिगैर रह नहीं सकता, मेरा कोई हल निकालें।

मैने तसल्ली देते हुये कहा कि आप का हल निकालता हूँ, लेकिन उससे पहले मेरी बात सुन लें!

हज़रते आतिका बिन्ते ज़ैद का निकाह हज़रते अब्दुल्लाह बिन अबू बकर सिद्दीक़ से हुआ था, आप उनसे बे हद मुहब्बत करते थे, उनकी जुदाई बिल्कुल बरदाश्त ना करते, इसी वजह से जब बाज़ जंगों में शरीक ना हो सके तो सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर ने कहा कि अपनी बीवी को तलाक़ दे दो!

आपने वालिद की इता'अत में ना चाहते हुये भी तलाक़ (रजयी) तो दे दी, लेकिन शिद्दत -ए- मुहब्बत में अश'आर पढ़ते रहते थे।

एक दिन सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर ने सुना, वो कह रहे थे :

ए आतिका! मै तुझे उस वक़्त तक नहीं भूलूँगा जब तक मशरिक़ से रौशनी निकलती रहेगी और तौक़ दार क़ुमरी (एक परिन्दा) कू कू करती रहेगी।

ए आतिका! हर दिन रात मेरा दिल तुझे याद करता है, उन जज़बात की वजह से जो मेरे अंदर छुपे हैं।

ये अश'आर सुनकर सैय्यिदुना सिद्दीक़ -ए- अकबर पर रिक़्क़त तारी हो गई और आपने फरमाया : (तलाक़) से रुजू कर लो!

कुछ अर्से बाद जब हज़रते अब्दुल्लाह रदिअल्लाहु त'आला अन्हु शहीद हो गये तो हज़रते आतिका ने उनका मरसिया कहा, जिसका एक शेर ये था :

فآليت لاتنفک عينى حزينة

عليک، ولا ينفک جلدى اغبرا

मैने क़सम खायी है कि मेरी आँखें आप पर हमेशा रोयेंगी और मेरा बदन गुबार आलूद रहेगा।

फिर सैय्यिदुना उमर फारूक़ ने हज़रते आतिका को पैगाम -ए- निकाह भेजा, जिसे आप ने क़बूल कर लिया।

वलीमे पर हज़रते अली भी मौजूद थे, आप कहने लगे कि अमीरुल मोमिनीन! इजाज़त दें मै आतिका से बात करना चाहता हूँ। इजाज़त मिलने पर आपने दरवाज़े की औट में खड़े होकर कहा :

ياعدية نفسها اين قولک

ए अपनी जान की दुशमन, तेरा ये क़ौल कहाँ गया कि "(ए अब्दुल्लाह) मैने क़सम खायी है कि मेरी आँखें आप पर हमेशा रोयेंगी और मेरा बदन गुबार आलूद रहेगा।"

ये सुनकर हज़रते आतिका रो पड़ी।

सैय्यिदुना उमर कहने लगे :

ए अबुल हसन! आपको ये बात दोहराने की क्या ज़रूरत पेश आ गयी?

كل النساء يفعلن هذا

सारी औरतें इसी तरह करती हैं।

(انظر: اسدالغابة فی معرفة الصحابة، باب العین، ج5، ص337، ر7088، دارالمعرفة بیروت)

मैने कहा कि इसमें हमारे लिये बहुत कुछ सबक़ है!
औरत के बहते आँसू और मुहब्बत भरे अल्फाज़ पर बहुत ज़्यादा एतिमाद करने के बजाये अक़्लो समझ से काम लेते हुये, अपने आपको क़ाबू में रखना चाहिये।

दाना कहते हैं :

1- खाना जब तक हज़म ना हो जाये उसकी तारीफ नहीं करनी चाहिये।

2- दोस्त से जब तक क़र्ज़ ना माँग लें उस पर भरोसा नहीं करना चाहिये।

3- और औरत के मरने से पहले तारीफ़ नहीं करनी चाहिये।

(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثانی فی العقل والذکاء، ص20، ط دارالکتب العلمیة بیروت، س1436ھ)

क्योंकि खाना, हज़म होने से पहले पेट और मादा भी खराब कर सकता है, इसलिये क़ाबिल -ए- तारीफ उसी वक़्त होगा जब हज़म हो जाये।
और बातों बातों में दोस्ती के दावे हर कोई कर सकता है, लेकिन जब दोस्त से क़र्ज़ माँगा जाये तो मालूम होता है कि वो कितना मुख्लिस है।
और औरत ज़िन्दगी में किसी मोड़ पर भी वफ़ा बदल सकती है, इसलिये मरने से पहले तारीफो तौसीफ़ से परहेज़ करना चाहिये।
आज कल हमारे नौजवानों की एक तादाद औरतों की डसी हुयी है, अल्लाह पाक उनके हाल पर रहम फरमाए।

बे इंतिहा मुहब्बत सिर्फ और सिर्फ रसूल -ए- पाक ﷺ से करें, बाक़ी सब मुहब्बतें झूठी हैं।

अल्लामा क़ारी लुक़मान शाहिद

जो मुहब्बत (इश्क़े मजाज़ी) में जकड़ा गया हक़ीक़त में महशर में पकड़ा गया

मुहब्बत और इश्क़ का माना व मफहूम :

मुहब्बत की तारीफ करते हुये इमाम रागीब अस्फहानी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं :

اِرَادَةُ مَا تَرَاهُ اَوْ تَظُنُّهُ

यानी उस चीज़ की ख्वाहिश करना जिसे तू अपने लिये अच्छा और बेहतर गुमान करता है।

(مفردات امام راغب رحمت اللہ علیہ)

तारीफ में लफ्ज़ ख्वाहिश (Wish) पर गौर किया जाये तो मालूम होगा कि मुहब्बत दर अस्ल हमारे दिल की एक कैफियत (Condition) का नाम है क्योंकि जब दिल को कोई चीज़ अच्छी लगती है तो वो उस के हुसूल के लिये बेताबी का इज़्हार करता है और इन्सान से बार बार इस का मुतालबा करता है और यही मुतालबा ख्वाहिश कहलाता है पस नतीजा ये निकला है कि दिल के किसी पसंदीदा शय की जानिब माइल (Bent) हो जाने का नाम मुहब्बत है।

और इश्क़ की तारीफ करते हुये हज़रत अल्लामा इब्ने मन्ज़ूर रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं :

اَلعِشْقُ فَرْطُ الحُبِ

यानी मुहब्बत में हद से तजावुज़ करना इश्क़ है।

(لسان العرب جلد 9)

मालूम हूअ कि जब दिल किसी की जानिब माइल होने में हद से तजावुज़ कर जाये तो उस मैलान को इश्क़ कहते हैं। मज़कूरा उमूर का खुलासा ये हुआ कि जब तक दिल किसी की तरफ़ माइल होने में हद से तवाजुज़ ना करे तो ये इतना माइलन मुहब्बत कहलाता है और जब इस माइलन व क़शिश में सिद्दत पैदा हो जाये तो उसे इश्क़ का नाम दिया जाता है।

(بحوالہ میٹھا زہر، ص6)

हम यहाँ पर मुहब्बत की दो क़िस्म बयान करेंगे :

(1) मुहब्बत (इश्क़) हक़ीक़ी

(2) मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी

(1) मुहब्बते हक़ीक़ी जो सिर्फ अल्लाह ﷻ व रसूलुल्लाह ﷺ या अल्लाह व उसके रसूल ﷺ की रज़ा के लिये किसी से की जाये, जैसा कि अल्लाह त'आला ईमान वालों के ताल्लुक़ से खुद इरशाद फरमाता है :

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ؕ

और ईमान वाले सब से ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत करते हैं।

सीरतुल जिनान में इस आयत की तफ़सीर ये है, अल्लाह त'आला के मक़बूल बन्दे तमाम मखलूकात से बढ़ कर अल्लाह त'आला से मुहब्बत करते हैं। मुहब्बते इलाही में जीना और मुहब्बते इलाही में मरना उन की हक़ीक़ी ज़िन्दगी होती है अपनी खुशी पर अपने रब की रज़ा को तरजीह देना, नर्म गुदाज़ बिस्तरों को छोड़ कर बारगाहे नियाज़ में सर

बा-सुजूद होना, यादे इलाही में रोना, रज़ा ए इलाही के हुशूल के लिये तड़पना, सर्दियों की तवील रातों में क़ियाम और गर्मियों के लम्बे दिनों में रोज़े, अल्लाह त'आला के लिये मुहब्बत करना उस की खातिर दुश्मनी रखना, उस की खातिर किसी को कुछ देना, उस की खातिर किसी से रोक लेना, नेमत पर शुक्र, मुसीबत में सब्र, हर हाल में खुदा पर तवक़्क़ल, और हर मुआमले को अल्लाह त'आला के सुपुर्द कर देना, अहक़ामे इलाही पर अमल के लिये हमा वक़्त तैय्यार रहना, दिल को गैर की मुहब्बत से पाक रखना, अल्लाह त'आला के महबूबों से मुहब्बत और अल्लाह त'आला के दुश्मनों से नफरत करना, अल्लाह त'आला के प्यारों का नियाज़मन्द रहना, अल्लाह त'आला के सब से प्यारे रसूल व महबूब ﷺ को दिलो जान से महबूब रखना, अल्लाह त'अला के कलाम की तिलावत करना, अल्लाह त'आला के मुक़र्रब बन्दों को अपने दिलों के क़रीब रखना, उन से मुहब्बत रखना, मुहब्बते इलाही में इज़ाफे के लिये उन की सोहबत इख्तियार करना, अल्लाह त'आला की ताज़ीम समझते हुये उन की ताज़ीम करना, ये तमाम उमूर और उन के इलावा सैकड़ों काम ऐसे हैं जो मुहब्बते इलाही की दलील है और इस के तक़ाज़े भी हैं।

(صراط الجنان سورۃ البقرۃ،165:2)

हज़रते अबू दरदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फरमाया कि दाऊद अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की:

ए मेरे रब! मैं तुझ ही से तेरी मुहब्बत और तेरे महबूबों की मुहब्बत और ऐसे अमल की तौफीक़ का सवाल करता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुँचा दे। या अल्लाह अपनी मुबब्बत को मुझे मेरी जान और मेरे अहल, धन्धे पानी से ज़्यादा महबूब कर दे और नबी -ए- करीम ﷺ जब कभी हज़रते दाऊद अलैहिस्सलाम का तज़्किरा करते या उनके बारे में कोई वाक़िया सुनाते तो फरमाते दाऊद अलैहिस्सलाम सब से ज़्यादा इबादत गुज़ार थे। ये हदीस सहीहुल सनद है।

(المستدرک مترجم،ج3،ص434)

मुहब्बते इलाही की अलामत:

और मुहब्बते इलाही की अलामत ये है कि उस के मुहिब और महबूब और महबूबों को दोस्त रखे और उस से बुग्ज़ रखने वालों और जिन पर वो नाराज़ है उन्हें दुश्मन समझे, उस की नाफरमानी के क़रीब ना जाये और इबादत को पूरी खुशदिली और शौक़ से अदा करे और खुशदिली के साथ उस की राह में माल क़ुरबान करे।

(تفسیر عزیزی مترجم، ص540)

मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी का मतलब :

(इश्क़) मजाज़ी उस इश्क़ को कहते हैं जो नफ्स की ख्वाहिशात की तक़मील की गर्ज़ से सिर्फ खूबसूरत और बे-ऐब खवातीन व लड़कियों और लड़कों से किया जाता है।

हमारा मुआशरा :

हमारे मुआशरे में मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी इस हद तक फैशन बन चुका है कि इस की बे-हयाई पर बड़े अज़ाइम व जसारत के बाद भी रोक थाम बहुत मुश्किल है।

नौजवान तबका मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी में गिरफ्तार हुस्न के जाल में फरेफ्ता होकर अल्लाह ﷻ व रसूल ﷺ के फरामीन को फरामोश कर मुहब्बत (इश्क़) हक़ीक़ी से दूर हो रहा है।

भूल गये रब की सभी मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी में खो कर,
मुहब्बत (इश्क़) हक़ीक़ी ना हो तो मजाज़ी भी नहीं मिलता रो कर।

जो लोग मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी में गिरफ्तार हैं या दूसरे लोगों को गिरफ्तार होने की तरगीब देते हैं, जो खुद मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी में गिरफ्तार है वो बेहयाई की दावत देता है, खुद को और जिस के इश्क़ में मुब्तिला है उस को, दूसरे वो लोग जो इश्क़ मजाज़ी

को हज़रते आदम अलैहिस्सलाम या हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम या लैला मजनू की तरफ़ मंसूब कर के इश्क़ मजाज़ी में मुब्तिला रहने वालों को बेहयाई की तरगीब देते हैं।

अल्लाह ﷻ ने इरशाद फरमाया :

اِنَّ الَّذِیْنَ یُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِیْعَ الْفَاحِشَةُ فِی الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ فِی الدُّنْیَا وَ الْاٰخِرَةِ ؕ

तर्जुमा : बेशक़ जो लोग चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई की बात पहुँचे उन के लिये दुनिया और आखिरत में दर्दनाक अज़ाब है।

(سورۂ نور:19)

हुज्जतुल इस्लाम इमाम गज़ाली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु तहरीर फरमाते हैं :

जो शख्स तीन चीज़ों का दावा करता हो मगर तीन चीज़ों से पाक नहीं वो धोखे में होता है।

(1) वो ज़िक्रुल्लाह से खलावत हासिल होने का दावा करता हो लेकिन फिर भी दुनिया से मुहब्बत रखता हो।

(2) इबादत में इख्लास का दावा रखे लेकिन साथ ये भी चाहे कि लोग ताज़ीम बजा लायें।

(3) जो खुद को नहीं गिराता मगर अल्लाह त'आला की मुहब्बत का दावा करे।

जनाबे रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

जल्द ही मेरी उम्मत पर ऐसा वक़्त आने वाला है कि वो पाँच चीज़ों से मुहब्बत करने लगे और पाँच को भुला देंगे। दुनिया दुनिया की जाप होगी और आखिरत को भूल जायेंगे, माल से मुहब्बत करेंगे और मुहासिबा याद ना रखेंगे, मख्लूक़ से मुहब्बत करेंगे और खालिक़ को भुला देंगे।

म'आसी से मुहब्बत करते होंगे और तौबा को भूल जायेंगे, मुहल्लात उन को प्यारे होंगे और क़ब्रिस्तान फरामोश करेंगे।

(مکاشفۃ القلوب ص71,72)

हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ की पेशनगोयी मखलूक़ से मुहब्बत करेंगे और खालिक़ को भुला देंगे। मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी के मरीज़ों का यही हाल है वो मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी जो वो नफ्स की ख्वाहिशात की तक़मील की गर्ज़ से सिर्फ खूबसूरत और बे-ऐब खवातीन वा लड़कियों और लड़कों से करते हैं और खालिक़ के फरामीन को फरामोश कर बैठे हैं।

अल्लाह अज़्ज़्वजल ने मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी से रोका है मुहब्बत (इश्क़) हक़ीक़ी से नहीं। इश्क़े मजाज़ी में इन्सान अपने ईमान को ही बरबाद कर बैठता है मुलाहिज़ा फरमायें इस हिक़ायत से :

एक मुअज़्ज़िन जिसने चालीस साल तक मीनारे पर चढ़कर अज़ान दी। एक दिन अज़ान देने के लिये मीनारे पर चढ़ा और अज़ान देते हुये जब हय्य-अलल-फलाह पर पहुँचा तो उस की नज़र एक नसरानी (ईसाई) औरत पर पड़ी। उस के अक़्ल और दिल जवाब दे गये अज़ान छोड़कर उस औरत के पास जा पहुँचा और उसे निकाह का पैगाम दिया वोह (नसरानी) औरत कहने लगी मेरा महर तुझ पर भारी होगा।

उस शख्स ने कहा : तेरा महर क्या है?

औरत बोली : दीने इस्लाम को छोड़कर मेरे मज़हब में दाखिल हो जा।

उस मुअज़्ज़िन ने अल्लाह का इंकार कर के उस औरत का मज़हब इख्तियार कर लिया।

फिर नसरानी औरत ने उस से कहा मेरा बाप घर के निचले कमरे में है तुम उस से निकाह की बात करो।

जब वो नीचे उतरने लगा तो उस का पाऊँ फिसल गया जिसकी वजह से वो कुफ्र की हालत में ही गिर कर मर गया!

अपनी शहवत को भी पूरी ना कर सका और उसे ईमान से भी हाथ धोना पड़ा। अल्लाह की बारगाह में बुरे खातिमे से पनाह माँगते हैं।

(الروض الفائق فی المواعظ و الرقائق ترجمہ بنام حکایتیں اور نصیحتیں، ص42)

(عشق مجازی عشق مجازی اس کے اسباب نقصانات اور اسکا حل، ص19)

इस वाक़िये से मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी के में मुब्तिला रहने वाले अपना मुहासिबा करें अल्लाह की बारगाह में दुआ है वो अपने हबीब नबी ए करीम ﷺ के सदक़े हम को मुहब्बत (इश्क़) मजाज़ी की बला से महफ़ूज़ रखे और मुहब्बत (इश्क़) हक़ीक़ी अता फरमाये।

आमीन सुम्मा आमीन

शोएब अहमद (बहराइच शरीफ़)

जन्नती हूर के बारे में भी सोचें

हज़रते जुन्नून मिस्री रहमतुल्लाही त'आला अलैह एक जवान लड़के को कुछ लिखवा रहे थे कि एक हुस्नो जमाल की मलिका सामने से गुज़री, वो जवान लड़का नज़रें चुरा चुरा कर उस लड़की की तरफ़ देखने लगा।

हज़रते जुन्नून मिस्री ने देख लिया और उस लड़के की गर्दन फेर कर ये शेर कहा :

دع المصوغات من ماء وطين

واشغل هواک بحور خرد عین

"पानी और मिट्टी से बनी औरतों को छोड़ और अपने इश्क़ और ख्वाहिश को उस हूर का मतवाला बना जो कुँवारी है और मोटी आँखों वाली है।"

(ذم الھوی لابن جوزی)

प्यार प्यार का जाप जपने वालों को कभी जन्नती हूरों के बारे में भी सोचना चाहिये जो इस दुनिया की औरतों की तरह नहीं कि आप को धोका दे, आप को परेशान करे या आप से आप के माल की वजह से मुहब्बत करे।

इस चार दिन की ज़िन्दगी में प्यार मुहब्बत के इलावा और भी बहुत से काम हैं जिन्हें कर के आप अपनी दाईमी दुनिया यानी आखिरत को सँवार सकते हैं वरना ये "दो दिन वाला प्यार" आप को दाईमी मुसीबत में डाल देगा।

अब्दे मुस्तफ़ा

गर्ल फ्रेंड और बॉय फ्रेंड क़ियामत में एक दूसरे के दुश्मन होंगे

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि एक इबादत गुज़ार शख्स को एक लड़की से इश्क़ हो गया। उन के इश्क़ का पूरे शहर में चर्चा हो गया। एक दिन लड़की ने कहा कि अल्लाह की क़सम मै आप से मुहब्बत करती हूँ। लड़के ने कहा कि अल्लाह की क़सम मै भी तुम से मुहब्बत करता हूँ। लड़की ने कहा कि मै चाहती हूँ कि अपना मुँह तुम्हारे मुँह पर रखूँ। उस ने कहा कि मै भी यही चाहता हूँ। लड़की ने कहा कि मै चाहती हूँ कि अपना सीना

तुम्हारे सीने से लगाऊँ और अपना पेट तुम्हारे पेट से लगाऊँ। उस ने कहा कि मै भी यही चाहता हूँ।

लड़की ने कहा कि फिर तुम्हें किस ने रोका है? अल्लाह की क़सम यही तो मुहब्बत का मौक़ा है तो उस ने जवाब दिया कि अल्लाह त'आला का फरमान है।

اَلۡاَخِلَّآءُ یَوۡمَئِذٍۭ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الۡمُتَّقِیۡنَ ﴿ؕ (67:43)

"उस (क़यामत के) दिन गहरे दोस्त एक दूसरे के दुश्मन हो जाएंगे सिवाए परहेज़गारों के"

फिर वो कहने लगा कि मै इस को पसंद नहीं करता कि तुम्हारी और मेरी दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी में बदल जाये। लड़की ने कहा कि हमारा रब हमारी तौबा क़ुबूल कर लेगा लिहाज़ा हम तौबा कर लेंगे। उस ने कहा कि क्यों नहीं लेकिन मुझे इस का इत्मिनान नहीं है कि मुझे अचानक मौत ना आ जाये। फिर वो उठा और उस की आँखों में आँसू थे और फिर दोबारा कभी उस लड़की के पास ना गया और अपनी इबादत में मसरुफ हो गया।

(ذم الھوی لابن جوزی ملخصًا)

नौजवानों अगर तुम्हें किसी से प्यार हो गया है और तुम्हारा प्यार सच्चा है तो क्या तुम ये पसन्द करोगे कि चंद दिनों की दुनिया के बाद क़ियामत में तुम्हारा महबूब तुम्हारा दुश्मन हो जाये?

क्या ये अच्छा होगा कि आज तुम इसे हासिल कर लो लेकिन हमेशा के लिये खो दो? नहीं हरगिज़ नहीं!

एक सच्चा आशिक तो ये चाहेगा कि मै अपने महबूब को हमेशा के लिये हासिल कर लूँ और उस का एक ही तरीक़ा है कि तक़वा को ना छोड़ा जाये और गुनाहों से बचा जाये।

आप को जिस से मुहब्बत हुई उस से निकाह कर लीजिये। यही सब से बेहतरीन हल है। इस से आप को यहाँ भी फाइदा होगा कि आप का महबूब आप की नज़रों के सामने होगा और आप का तक़वा भी सलमात रहेगा और वहाँ भी आप अपने महबूब को महबूब ही पायेंगे ना कि दुश्मन।

अगर निकाह ना हो पाये तो कोई ऐसा काम ना करें जो आप के महबूब को आप से हमेशा के लिये दूर कर दे। अगर आप ने अपना दामन गुनाहों से खाली रखा तो यक़ीन जानिये कि अल्लाह त'आला हर शय पर क़ादिर है, वो आप के दामन को आप की मुरादों से भर देगा।

अब्दे मुस्तफ़ा

OUR OTHER PAMPHLETS